राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक

डॉ. पद्मधर पाठक

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्ग-१६०

गोस्वामिशिवानन्दभट्टप्रगीत

सिंहसिद्धान्तसिन्धु (तृतीय खण्ड)

सम्पादक

गोस्वामिलक्मोनारायण दीक्षित

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर Rejasthan Oriental Research Institute, Jodhpur 1990

प्रथमावृत्ति 1000

मूल्य इ. 82.00

अथ सिंहसिद्धान्तसिन्धोस्तृतीयखण्डस्य तरङ्गान्तर्गतानां विषयाणामनुक्रमः

[सप्तित्रिशस्तरङ्गः पृष्ठ-१-३६]

| विषय: | पृष्ठ संस्या |
|--|--------------|
| वैयम्बकमनोविधानम् | |
| त्रैयम्बकमनोरुद्धारः | |
| मःत्रनिरुक्तिः | 8-5 |
| ऋष्यादिः | |
| षडङ्गन्यास-मन्त्रपदन्यास-शक्तिन्यासविधिः | 3-8 |
| ध्यानम्, पीठाचंनिविधिः | 8-1 |
| तत्प्रयोगः | ₹-€ |
| पुरश्चरणम् | Ę- 0 |
| काम्यकर्मनिर्देशः | 9-5 |
| शारदातिलकोक्तः काम्यन्यासिवधिः | =-20 |
| च्यासत्रयोगः | \$0 |
| काम्यकर्महोमविधिः | 55 |
| वसिष्ठकल्पोक्तस्त्रियम्बकमन्त्रस्य विनियोगः | \$ 5-18 |
| (काम्यहोमतपंगाजपप्रयोगविधिः) तत्र-कर्माणि- | |
| पूर्णायुःप्राप्तः, श्रारोग्याप्तः, ज्वर-प्रमेह-गुल्मणूल- | |
| वातरोगातीसाराक्षिरोगापस्मार-पक्षणूल- | |
| कापालरोग-राजयक्षम-गर्भरोग-मुखरोग- | A THE PARTY |
| शिरोरोग-सर्वोदररोगान्तस्तापशान्तिश्च | |
| भ्रात्मनः परस्य वा ग्रायुरारोग्यादिसिद्धचर्थं | 62-62 |
| जुपटोमादीनां क्रियाकालावधिसचनम् | |

| विषय: | वृष्ठ संस्या |
|---|--------------------|
| ग्र पमृत्युजयोपायौ | 82 |
| ग्रपमृत्यु-व्याधि-शत्रुकृतभयनिवारकोऽभिषेकविधिः | 84-88 |
| परार्थे घनलोभादिना कृतकर्मगा आतमनामः | १६ |
| मातृपित्रादि-जनानामेव रक्षानिर्देशः | . 84 |
| ध्य रक्षाविधः | १७ |
| भस्मविधिः | 10 |
| ग्रहरोगोरगादिभयनिवृत्तये परिपुष्ट्यै च | १७-१- |
| ब्रङ्गुलीयक्धारणविधानम् | 7 |
| नारीगामतुलसौभाग्यमाङ्गल्याप्तये नवाभरग्रधारग्रविधिः | १द |
| दुःस्वप्न-भूतप्रेतादिसर्वोपद्रवनाशनार्थे सर्वसम्पत्समृद्धये च | 39-29 |
| प्रोषितागारणान्तिविधिः | |
| वृष्टघाष्ति-वृष्टिनिवारणकरो होमाभिषेकविधिः | 86-58 |
| वश्योच्चाटनविधिः | 55 |
| शत्रोमारिएविधिः | 58 |
| पुत्तलिकाविधानम् | 55 |
| शत्रूगां निग्रहोपायः | 56-58 |
| सर्वेशत्रुविनाशकः शत्रुञ्जययोगविधिः | 58 |
| सथाभिचारणान्तिविधिः (कृत्याणान्तिविधिः) | 5.8 |
| गजाश्वरोगशान्तिविधिः | 54 |
| पराभिचारणान्तिविधिः | 3= |
| ब्रह्महत्यादिपापनिवृत्तिकरो जपहोमादिविधिः | २ द |
| पहामृत्युञ्जयमनोर्भेदाः | 35 |
| मायुरारोग्यसौभाग्यधर्मार्थसुखमोक्षप्र इ | 98-30 |
| ग्रानुष्टुभयन्त्रविधिः | |
| 'मा त्वा रुद्रे' त्युङ्मन्त्रः | ₹0 |
| शारदातिलकोक्तं शिवस्तोत्रम् | 3 8 |
| धूर्यंकृतं शिवस्तोत्रम् | 38-38 |
| | The second section |
| स्कन्दपुरागोक्तः शिवकवचस्तोत्रम् | 35-36 |

| विषय: | वृष्ठ संस्या |
|--|--------------|
| वघूनाम्पुत्रभूमिगृहादिप्रदयन्त्रविधिः | 48 |
| नरवश्यकरं यन्त्रान्तरविधानम् | ** |
| प्रयाङ्कयन्त्राणां विधानम् | 48 |
| शताङ्क (शतसंख्यावधिक)यन्त्रधारएफलकथनम् | X3 |
| यन्त्रागां लेखाधाराः | X3-XX |
| ग्रङ्यन्त्राणां लेखनकमः | XX |
| कमंभेदेन नक्षत्रादि-लेखनीनिरूपगम् | X8-XX |
| यन्त्ररचनाप्रकारः | xx-x0 |
| यन्त्रसाधनविधिः | vy. |
| विभिन्नाङ्कयन्त्रागां फलनिर्देशः | 3 X-0 X |
| प्रकारान्तरेग लेखन-धारगिविधः | 3.8 |
| प्र भिषेकविधानम् | 3.8 |
| कलशस्थापनविधिः | ¥8-47 |
| मुवनेश्या बीजत्रयात्मको मन्त्रः | 4 65 |
| ऋष्यादिः | \$? |
| वडङ्गन्यासो ध्यानञ्च | 63 |
| तत्प्रयोगः | 63 |
| पुरश्चरग्गम् | 63 |
| कवित्व-वश्य-राज्यश्रीप्रदप्रयोगविधिः | 63 |
| पन्त्रान्तरम् | £ 3 |
| ऋष्यादि-षडङ्गन्यासध्यानानि | £8. |
| म्रथ प्रयोगः | ६४-६४ |
| ्र पुरश्चर ग् म् | ६४ |
| काम्यकर्मप्रयोगविधिः | ĘX |
| वाशादित्र्यक्षरो मन्त्रः | ६६ |
| तदृष्यादिध्यानाचीविधिः | ĘĘ |
| तत्प्रयोगः | Ę0 |
| काम्यप्रयोगविधिः | |
| Manager Manage | £0 |

| विषय: | व्य संख्या |
|---|---------------|
| चटागंलय•त्रम् | ६७-६ = |
| ग्रष्टाक्षरो मन्त्रः | ६८ |
| षोडशाक्षरो मन्त्रः | ६८ |
| यन्त्रनिर्मार्गविधिः | 37 |
| यन्त्ररचनाप्रकारः | 90-37 |
| वश्यादिकमेंसु यन्त्रघारणादिविधिः | 66-65 |
| वश्यविजयारोगदं यन्त्रम् | ७२ |
| त्वरितवाञ्चितार्थदं यन्त्रम् | \$6-20 |
| श्रीभुवनेश्वरीस्तुतिः | ७३-७६ |
| धन्या भुवनेशीस्तुतिः | ७७-८१ |
| त्रैलोक्यमङ्गलन्नाम भुवनेश्वरीकवचम् | E6-E8 |
| श्रीमातृकाविधानम्-तत्र— मातकामन्त्रस्तन्त्रान्तरोक्तं मन्त्रवर्गाना पथक्पथम्ध्यानञ्चम | EX-E/0 |
| | |
| मातृकामन्त्रस्तन्त्रान्तरोक्तं मन्त्रवर्णाना पृथक्पृथक्यानञ्चम् | 58-50 |
| ऋषिन्यासादिविधिस्तत्प्रकारश्च | 50-58 |
| नानातन्त्रोक्तो घ्यानभेदः | 56-60 |
| यन्त्रप्रकारो यजनविधिस्तत्प्रयोगश्च | £3-03 |
| कवित्वसिद्धये ब्राह्मीघृतविधिः | 83-83 |
| मुद्रिका (रुचक) धारणविधिः स्वर्णादिमानञ्च | £8-6x |
| तन्त्रराजोक्तो यन्त्रविधिर्यन्त्ररचनाप्रकारण्च | 67-60 |
| मातृकाविद्योपासकानामन्यविद्योपासकानाञ्च | |
| प्रागाग्निहोत्रविधिस्तत्प्रयोगो होमप्रकारक्व | 808-63 |
| भोजनकाले कत्तंव्यप्रागाग्निहोत्रविधिस्तत्फलञ्च | 808-803 |
| भूत लिपेर्विधानम् | 803-800 |
| भूतिलप्याः प्रयोगस्तत्र | |
| संहार-सृष्टि-स्थितिन्यासाः, पूजायन्त्रे यजनं, जपादिविधिश्च | 200-660 |

| विषयः | पृष्ठ संख्या |
|---|--------------|
| काम्यकर्मार्ग-तत्र- | |
| राजवश्यं, लक्ष्मीसिद्धिः, वनितावश्यं, सर्वसिद्धिदो योगश्च | 880 |
| क्ष्वेड-(विष)हरमाकाशयन्त्रम्, सर्वशान्ति- | |
| करं यन्त्रं, उच्चाटन-मारणयन्त्रञ्च | 880-888 |
| रक्षायन्त्रं, रिपुनाशनयन्त्रं, वश्यदं वारुग्यन्त्रं, स्तम्भक्न- | |
| द्भूमियन्त्रञ्च | £88-883 |
| बागीश्वर्याः सरस्वत्याः विधिः-तत्र- | TIMESON - |
| दशाक्षरीमन्त्रविधिः | 88=-88X |
| दशाक्षरीमन्त्रप्रयोगस्तत्काम्यविधिश्च | ११४-११६ |
| वागैश्वर्यफलप्रदः षोडशाक्षरोमन्त्रस्तत्प्रयोगस्तत्काम्यविधिश्व | ११७-११5 |
| एकादशाक्षरो हंसवागोश्वरीमन्त्रस्तत्त्रयोगस्तत्काम्यविधिश्च | 28=-820 |
| शारदातिलकोक्तं कादशाक्षरमन्त्रविधिः | 820 |
| सारसङ्ग्रहादि गुक्तास्त्वन्ये मन्त्रास्तत्र- | ALCOHOL: |
| पारिजातसरस्बत्या एकादशाक्षरो मन्त्रः | 858 |
| सप्तकोटोश्वर्या वागैश्वर्यप्रदः सप्तार्गो मन्त्रः | 858 |
| वाग्वादिन्याः वाक्सिद्धित्रद एकित्रगक्षरो मन्त्रः | 222-228 |
| सारस्वतस्त्र्यक्षरात्मको मन्त्रस्तद्विधिस्तत्काम्यविधिश्च | १२२-१२३ |
| ब्रह्मपुराणोक्तं सरस्वतीस्तोत्रम् | 153-658 |
| प्रपञ्चसारोक्तं सरस्वतीस्तोत्रम् | १२४-१२६ |
| सरस्वत्युपासकानां वर्ष्यकर्मािए। | १२६-१२७ |
| [चत्वारिशस्तरङ्गः-नृष्ठ-१२८-१७४] श्रीलक्ष्मीमन्त्रविधानम्-तत्र- | |
| | १२८-१३० |
| तत्प्रयोगः काम्यविधिश्च | 830-838 |
| काम्ययन्त्रविधानम्-तत्र ऋक्पञ्चकयन्त्रम्, ऋग्वेदोक्त | TOTAL . |
| ऋतपञ्चकञ्च वे प्राप्त विकास | 845-848 |
| श्रीयन्त्रसारोक्तमन्यत्स्थापनयन्त्रम् | 638-63X |
| चतुरक्षरमन्त्रविधिः | \$\$X-8.\$£ |
| दशाक्षरमन्त्रविधिस्तत्प्रयोगः काम्यविधिश्च | 234-235 |
| | |

200

| विषय: | पृष्ठ संख्या |
|---|--------------|
| ग्रष्टाविशाक्षरलक्ष्मीहृदयमन्त्रविधिः | 632-680 |
| तत्त्रयोगः काम्यविधिश्च | 1880-685 |
| सर्वमा म्राज्यदायिनोलक्ष्मोमन्त्रविधिर्वलिदानविधिश्च | 885-888 |
| तैरप्रयोगः | 88X-888 |
| त्रिशक्तिमन्त्रस्तयजनविधिस्तत्प्रयोगश्च | 186-18= |
| महालक्ष्म्या द्वादशाक्षरमन्त्रविधानम् | 68E-688 |
| तत्प्रयोगः काम्यक्रमम् विधिश्च | 848-848 |
| महालक्ष्म्याः काम्ययन्त्रविधिस्त्वरिताविद्यामन्त्रश्च | 328 |
| महालक्ष्म्याश्चतुर्वशाक्षरमन्त्रद्वयम् | १६० |
| महालक्ष्म्याः सप्तार्खी मन्त्रः | १६० |
| महालक्ष्म्या एकादशाक्षरो मन्त्रस्तत्त्रयोगश्च | 940-949 |
| ऋक्पञ्चदशकात्मकस्य श्रीसूक्तस्य विधानम् | १६१-१६२ |
| श्रीसुक्तस्य प्रयोगः | १६२-१६७ |
| श्रीसुक्तस्य धारण-स्थापनयन्त्रविधिस्तत्प्रयोगश्च | १६७-१६= |
| विष्णुपुरागोक्तं लक्ष्मीस्तोत्रम् | 962-808 |
| हकन्दपुरागोक्तं लक्ष्मीस्तोत्र ग् | \$09-903 |
| श्रीमन्त्रजापिनां केचिन्नियमाः | १७३-१७४ |
| [एक बत्वारिशस्तरङ्गः-१७६-२३२] | |
| षथ मातङ्गीमन्त्राः-तत्र- | |
| राजमातङ्गिन्या श्रष्टाशीत्यक्षरमन्त्रविधिः | 808-828 |
| तत्त्रयोगः काम्यक्रममिविधिष्च | १८४-१८६ |
| राजमातङ्ग्याः पञ्चनवत्यक्षरो मन्त्रः | १८८ |
| राजमातङ्ग्याश्वतुःपञ्चाशदक्षरैकाधिकषष्ट्यक्षरौ मन्त्रीः | 958-980 |
| वश्यमातङ्ग्याः सप्तचत्वारिशार्गो मन्त्रः | . 039 |
| मातङ्गीरत्नदेवतामन्त्र-यन्त्रविधिः | \$39-039 |
| मातङ्गीरत्नदेवतामन्त्रप्रयोगस्तकाम्यकर्मविधिष्य | 739-539 |
| मातङ्गे श्वय्या ग्रब्टनवत्यक्षरमन्त्रविधिः | |

| विषय: | पृष्ठ संख्या |
|--|--------------|
| तत्त्रयोगस्तत्काम्यकरमंविधौ पुत्तलिकादिविविधकरमांशि | 200-204 |
| तन्त्रराजोक्ता नक्षत्रवृक्षाः | २०४-२०६ |
| मत्स्येन्द्रसंहितोक्तं पुत्तलीमानम् | २०६-२०७ |
| मातङ्गीप्रीतये चतुःषष्टियोगिनीयजनविधिः | 309-208 |
| मातङ्ग्या धारणयन्त्रविधानम् | 908-308 |
| चण्डमातिङ्गन्याश्चतुर्दशाक्षर मोन्त्रः | 588 |
| शुभाशुभवादिनीमातङ्गीमन्त्रः | 288 |
| श्रीमातङ्गे श्वर्याः सद्यः शतगुराफलदायको मन्त्रः | 388 |
| प्रपञ्चसारोक्तः सर्वसम्मोहिन्या मन्त्रविधिः | 285 |
| उच्छिष्टचाण्डालिमातङ्गचा एकोनविशत्यक्षरमन्त्रयन्त्रविधः- | 285-588 |
| स्तत्प्रयोगश्च | |
| ग्रस्यैव मन्त्रस्य मन्त्रभेदेन विधिप्रयोगौ | ₹१४-₹१= |
| काम्यकृत्यविधानम् | 285-220 |
| मातङ्गीस्तोत्रम् | 220-228 |
| श्रीशङ्कराचार्यविरचितम्मातङ्गीस्तोत्रम् | २२१-२२३ |
| श्रीरुद्रयामलोक्तम्मातङ्गीकवचम् | 223-22X |
| तत्रैवोक्तमन्यन्मातङ्गीकवचम् | 374-778 |
| सुमुखीविधानम्-तत्र-ग्रनुक्तसंख्यकजपहोमयोः | |
| श्रष्टसंहस्रजपहोमौ, काम्यहोमविधिश्च | २२६-२३२ |
| [द्विचत्वारिशस्तरङ्गः-पृष्ठ-२३३-२५३] | Marie Inc |
| श्रीदुर्गामन्त्राः—तत्र— | |
| श्रीदुर्गाया श्रष्टाक्षरमन्त्रविधिः | 233-538 |
| श्रीदुर्गाया ग्रष्टाक्षरमन्त्रप्रयोग स्तद्यन्त्रविधिः काम्यकर्म्मविधिश्च | 3\$5-8\$\$ |
| महिषमिंद्दन्या ग्रष्टाक्षरमन्त्रविधिः | 234-235 |
| तत्त्रयोगस्तत्काम्यकम्मीविधिश्च | 365-266 |
| जयदुर्गाया दशाक्षरीविद्यामन्त्रविधिः | 236-580 |
| जयदुर्गाया द्वादशार्गमन्त्रविधिः | 380 |
| 1.3.1.4. \$1.4.1.4.4.4.4.4.4. | 100 |
| | |

| विषय: | पृष्ठ संख्या |
|---|---------------------|
| शूलिनीदुर्गायाः पञ्चदशाक्षरमन्त्रविधि। | 588-585 |
| पञ्चदशाक्षरमन्त्रप्रयोगः काम्यकृत्यविधिश्च | २४२-२४४ |
| ज्वालामालिन्या द्वाविशार्गो मन्त्रः | २४४ |
| वनदुर्गायाः सप्तत्रिशदर्गात्मकमन्त्रविधिः | २४४-२४७ |
| ग्रस्याः प्रयोगः | 280-585 |
| काम्यकर्मविधानं यन्त्रसाधनञ्च | २४द-२४३ |
| [त्रिचत्वारिशस्तरङ्गः-पृष्ठ-२५४-२८०] | THE PERSON |
| श्रीनवार्गमन्त्रविधानम्-तत्र- | SE OFFICE OF |
| त्र लोख्यडामराख्यनवाक्षरमन्त्रस्य प्रत्यक्षरध्यानम् | 588 |
| नवबीजनिबद्धभन्त्रस्य जपफलकथनम् | 544 |
| मन्त्रागा पम्पल्लवादिराहित्ये दोवफलकथनम् | २४४-२४६ |
| कामनाभेदेन लक्षरापुरस्सरम्पल्लवभेदाः | २४६ |
| स्नानादिविधिः | 588 |
| नित्यपूजाविधौ भूतशुद्धचादि-मातृकान्यासा- | PER STATE OF STREET |
| द्येकादणन्यासान्तो विधि: | २५७-२६३ |
| ग्रर्ध्यपात्रादिस्थापनम्पीठपू जाविधिश्च | २६३-२६७ |
| शूद्रागाम्पक्वान्ननेवेद्यदाननिषेधोक्तिः | 750 |
| चण्डीसप्तशतीजाप्ये सरहस्यचरितत्रयस्य | |
| नवार्गमन्त्रस्य च जपहोमिविधिस्तत्फलञ्च | २६७-२६= |
| चण्डीसप्तशतीस्तोत्रस्य चरितत्रयागां नवागंमन्त्रस्य | |
| ्र न्यासविधानम् | २६५-२६६ |
| नवार्णमन्त्रस्य प्रयोगः | 368-308 |
| १७ नित्यपूजाफलम् | 250 |
| [चतुश्चत्वारिशस्तरङ्गः पुष्ठ-२८१-३०६] | Tell per la |
| चण्डीसप्तशत्याः काम्यपूजाविधिः—तत्र- | THE PROPERTY OF |
| पूजापीठभेदेन फलभेदः | १८१ |
| ध्यानभेदेन फलभेदः | 7=1-7=7 |
| नित्यचण्डीविधानन्तत्प्रयोगश्च | २८२-२८३ |
| | |

| विषय: | पृष्ठ संख्या |
|--|---------------|
| नवदुर्गीविधिस्तत्प्रयोगश्च | 2=1-2=8 |
| नवचण्डीमहोत्सवविधौ बलिदानविधिस्तत्प्रयोगश्च | २=४-२=७ |
| शतचण्डीविधानम् –तत्र— | |
| ग्रनावृष्टचादिशान्तिकार्येषु शतचण्डीजपनिर्देशः | २८७ |
| मण्डपकुण्डयोनिर्देशः | - २८८ |
| मधुपवर्कविधानेन बाह्यगादीनां वरगाम्पूजनविधिश्च | 3=5 |
| सपरिमारापूजासामग्री | 980 |
| ब्राह्मएकुमारीभोजनम् | 980 |
| द्वितीयदिवसादिपञ्चमदिवसपर्य्यन्तस्तर्पंग्होमा— | |
| दिकृत्यविधिः | 135 |
| द्विजानां सपरिमाणं गोदानदक्षिणादानादिभिः | |
| परितोषराम् | \$35-537 |
| चिण्डिकाया ब्रह्मोक्तनामानि | £3 9 |
| चण्डिकाजपसिद्धये नवाक्षरमन्त्रसम्पुटोक्तिः | , 983 |
| षथ शतचण्डीप्रयोगः-तत्र- | TO THE STREET |
| मण्डप-कुण्डादिनिर्मारापूर्वंकमाचार्यादिद्विज- | ANGRED TO |
| वर्णादिविधानम् | 558 |
| दिग्देवता दिपू नापूर्वकम्प्रधानकुम्भस्थापनम् | 568 |
| कस्तूरीकुङ्कुमादिपूजासामग्रचाः परिमागोक्तिः | \$68-56X |
| सप्तशतीपाठपूर्वकम्प्रथमदिवसकृत्यादिचतुर्थदिव- | HERE SERVICE |
| सान्तकृत्यविधानम् | ×38 |
| पञ्चमदिवसकृत्यम् | 735 |
| सीवर्णनिष्कादिनिर्णयः | 725 |
| यजमानस्य ब्राह्मगाशीर्वचनैःसह गृहप्रवेशः | 250 |
| चण्डीपाठमाहात्म्यम्पाठप्रकारण्च | 786-58 |
| जयशब्दार्थः | 785 |
| मात्स्योक्तः पाठप्रकारः | 335 |
| ग्रभाऽग्निस्थापनविधिः | F0F-335 |
| | |

| विषय: | पृष्ट संख्या |
|---|----------------|
| ग्रग्निस्थापनप्रयोगः | ३०२-३०४ |
| ग्रथ कुमारीपूजाविधिः | 308-308 |
| कुमारीपूजाप्रयोगः | 308 |
| भ्रथ पूज्याऽपुज्यकुमारीलक्षरणानि | ₹04-306 |
| फलविशेषे कुमारीभेदोक्तिः | ₹00 |
| पृथ्दीधरकृतं दुर्गास्तोत्रम् | 305-00€ |
| [पञ्चक्त्वारिशस्तरङ्गः-पृष्ठ-३०२-३४०] | |
| ग्रथ भैरवीमन्त्राणां विधानम् -तत्र - | in Arthresis 1 |
| त्रिपुराशब्दव्युत्पत्तिः | 360 |
| पञ्चकूटात्मिकात्रिपुरभैरवीविद्यामन्त्रोद्धारस्तज्जपविधिक्व | ₹90-38€ |
| त्रिपुरभैरवीविद्यापूजाविधिः | ३१६-३१८ |
| त्रिपुरभैरवीविद्यामन्त्रप्रयोगः | 382 |
| विनियोगपुरस्सरमृष्यादिकर-षडङ्गन्य।स.देहन्यासादयः | 386-380 |
| पूजाप्रयोगः | ३२०-३२१ |
| पुर वर्याविधिः काम्यहोमविधिश्च | 3,8-323 |
| वश्यतिलकविधिः अस्ति । | \$23 |
| सारमंग्रहोक्तः काम्यविधिः | 358 |
| त्र पुरगायत्रीयन्त्रविधिः : | 328 |
| ग्रन्यत्त्रेपुरयन्त्रम् : विक्रालस्य | . 358-35X |
| पञ्चकामास्यं यन्त्रम् | 32% |
| त्रेपुरगायत्रीमन्त्रः | 374 |
| वाग्भवादिबीजत्रयस्य साधनम् अध्यक्षात्री व वाग्भवादिका | ३२४-३२६ |
| तन्त्रान्तरोक्तं वाग्भवादिबीजत्रयसाधनम् | 375 |
| े व्याप्त्रीपुरकन्देत्यपरनामा चैतन्यमन्त्र : | ३२६-२७ |
| देवीहृदयविद्याख्य ग्राह्मादिनीमन्त्रः | 370 |
| सिद्धे भ्वरीतन्त्रोक्तो दीपिनीमन्त्रः | 370 |
| चैतन्यभै रवोमन्त्रस्त चन्त्रपूजाविधिश्च : | 375-376 |
| एकादशाक्षरकामेश्वरीमन्त्र स्तत्वूजाविधिश्च1 | 378 |
| | |

| विषय: | पृष्ठ संख्या |
|---|-------------------|
| सम्पत्प्रदाभैरवीमन्त्रस्तद्यजनविधिस्त्रयस्त्रिशार्गः सिंहासनमन्त्रश्च | 386-338 |
| षट्कूटाभैरवीमन्त्रस्तद्यन्त्रयजनविधिश्च | 338-332 |
| नित्याभैरवीमन्त्रविधिः | 332 |
| भुवनेश्वरभैरवीमन्त्रस्तद्यजनविधिश्च | 332-333 |
| भुवनेश्वरभैरवीमन्त्रान्तरम् | \$33 |
| कोलेशभेरवीमन्त्रस्तद्यअनविधिश्च | . \$33 |
| डामरभैरवीमन्त्रस्तद्यजनविधिश्च | 333-338 |
| कालिकाभैरवीमन्त्रस्तद्यजनविधिश्च | 338 |
| भयविष्वंसिनीभैरवीमन्त्रस्तद्यजनविधिश्च | 338 |
| ग्रघोरभैरवीमन्त्रस्तद्यजनविधिश्च | X \$ \$ - 8 \$ \$ |
| श्रथ भैरवीस्तोत्रम् | 0 F F - X F F |
| भैरव्यास्त्रैलोक्यविजयन्नाम कवचम् | ₹9-₹80 |
| [ग्रथ षट्चत्वारिशस्तरङ्गः—पृष्ठ-३४१-३६४] | n and a |
| थय ग्रन्नपूर्णाविधानम्-तत्र- | |
| ग्रन्नपूर्णाया विशाक्षरीमन्त्रोद्धारः | 388 |
| ऋष्यादिकरषडङ्गन्यासविधिः | 388 |
| वर्गान्यासविधिः | 388 |
| पदन्यासनवद्वारन्यासविधिः | 386-385 |
| च्यानम् | 385 |
| यन्त्रन्तद्यजनविधिश्च | 385 |
| शिवसप्ताक्षरीमहाविद्यामन्त्रः शिवध्यानञ्च | \$83 |
| वराहविद्यामन्त्रः | \$8\$ |
| नारायणमन्त्रः | . 383 |
| भूशीमन्त्री | |
| परविद्या-भुवनेश्वरी-कमला-सुभगादीनाम्पूजामन्त्राः | |
| | \$ 28-38X |
| अः प्रन्नपूर्णापुरश्चरणम् | 388 |

| विषय: | पृष्ठ संख्या |
|--|---|
| श्रन्नपूर्णायाः बोडशार्णं-सप्तदशार्माष्टादशार्गंमन्त्राः | 386 |
| ग्रन्नपूर्णायाः त्रिश्लोकीस्तुतिः | 386-380 |
| ग्रन्नपूर्णास्तोत्रम् | 389-385 |
| ग्रन्नपूर्णाकवचम् | ३४८-३४० |
| . अन्नप्रदाख्यमन्त्रस्तज्जपादिविधः- | |
| स्तत्त्रयोगश्च | \$X6-3X8 |
| कामेशीमन्त्रविधि:-तत्र- | |
| कामेश्या एकाक्षरो मन्त्रस्तद्ध्यादिध्यानं, यजनविधिः, | |
| पुरश्चरगाञ्च | 3×8-3×5 |
| तत्प्रयोगः | \$X5-3X3 |
| पञ्चाक्षरीबाण्विद्यामनोर्जेपादिविधिः | 3 7 3 - 3 7 8 |
| पञ्चकामेश्वरीमन्त्रस्य जपयजनविधिः | \$X8 |
| यन्त्रसारोक्तो यन्त्रविधिः | JXR-JXX |
| कामेश्वरीत्र्यक्षरीमन्त्रस्य जप-यजनविधिः | 344-346 |
| भीबगलामुखीविधानम् ' | 80 1947 |
| श्रीवगलामुखीषट्त्रिशदक्षरीविद्यामन्त्रोद्धारः | ३४६-४७ |
| ऋष्यादिः, मन्त्रवर्णस्यासविधिश्च | OXE |
| ध्यानम्, यन्त्रोद्धारो यजनविधिश्च | ₹ ₹ - ₹ • |
| वगलामुखीप्रयोगः | 340 |
| मन्त्रसाधनविधिः | ३६०-३६१ |
| शीद्यप्रत्ययकारको वश्यादिषट्कर्मसाधनविधिः | 136 |
| पादुकासिद्धिरदृश्यकृद्धिलेपनं विषदारिद्रचमोचनञ्च | 746-346 |
| कामनायन्त्रम् | 348 |
| काम्यकर्मां ए। तद्विधानञ्च | \$\$x-\$\$X |
| [सप्तचत्वारिशस्तरङ्गः-३६६-३५३] | pir ship in |
| भथ त्रिपुटाविधानम् | AL SECTION OF THE PARTY OF THE |
| त्रिपुटायास्त्र्यक्षरो मन्त्रस्तदृष्यादिष्यानञ्च | 326 |
| . त्रिपुटाया यन्त्रन्तत्संक्षेपयजनविधिस्तत्त्रयोगश्च | 350-35= |

| विषय: | पृष्ठ संस्था |
|---|---------------------|
| पुरश्चरग्विधिस्तत्फलञ्च | 350 |
| श्रष्टाक्षरीमन्त्रविधिस्तत्प्रयोगः पुरश्चर्याविधिश्च | 345-346 |
| अभवारूढाया दणाक्षरमन्त्रविधिस्तद्द्यादयस्तःप्रयोगभ्च | 386-300 |
| पुरश्चर्याविधिः काम्यसाधनञ्च | 300-308 |
| दशार्णस्यैव मनोरेकादशार्णत्वं द्वादशार्णत्वं त्रयोदशार्णात्मव | त्वञ्च |
| तिद्विधिष्व | 308 |
| ग्रश्वारूढायाः सर्वकाम्दं यन्त्रन्तत्साधनञ्च | ३७१ |
| एकविशार्यो मन्त्रः | ₹७२ |
| ग्रश्वारूढास्तोत्रम् | ३७२ |
| .गौरोषोडगार्णमन्त्रस्तद्ध्यादयो यजनविधिश्च | ३७३ |
| प्रवञ्चसारोक्तः पीठपूजाविधिः पीठमन्त्रस्तद्गायत्री च | ३७३ |
| गौरीप्रयोगः | ३७४ |
| पुरश्चर्याविधिः काम्यविधिश्च | १७४-७४ |
| एकोनविशाक्षरः स्त्रीवश्यकरो मन्त्रः | xef . |
| सर्ववश्यप्रदः सप्तवर्गात्मकः पद्मावतीमन्त्रः | ₹ ex |
| ऋध्यादिध्यानार्चाविधिः | १७४ |
| पुरश्चरणं, वश्यदयन्त्रञ्च | ३७६ |
| ज्येष्ठालक्ष्मीमन्त्रस्तदृष्यादिः, पदपञ्चकन्यासम्ब | 305 |
| ध्यानादि-यजनान्तविधिः ज्येष्ठालक्ष्मीगायत्रीमनुश्च | १७६-७७ |
| पुरश्चर्या तत्फलञ्च | ₹99-95 |
| ग्रहभीतिहरस्त्र्यक्षरःस्त्रिकण्टकीमन्त्रस्तर्ह्यादिःध्यनिं, | |
| यजनविधिश्च | ३७६ |
| त्र्यक्षरो वश्यत्रिकण्टकीमन्त्रः | ₹95 |
| सर्वसिद्धिर्दोऽष्टवर्गात्मको वैष्रावीमन्त्रः | 305 |
| ऋष्यादिन्यासविधिध्यानं यजनविधि- | 308 |
| र्गायत्रीमन्त्रश्च . | \$50-358 |
| एवीमन्त्रप्रयोगः पुरब्चर्या च | \$=\$ |
| वैष्णव्याः षडक्षरात्मको वसुवर्णात्मकम्च मन्त्रः | THE PERSON NAMED IN |
| 4-6-41 4041/1/41 484/1/444 4/41 | 3=8 |

(8%) विषय: वृष्ठ संस्या महामायोपासकानां वाक्यानि, विपन्नदशायां नित्यनैमित्ति ह कर्मत्यागविचारश्च 3=7-3=3 [अव्टचत्वारिशस्तरङ्गः-पृष्ठः-३८४-४०३] परिमलमन्त्रविधानम्-तत्र-3=8 परिमलमन्त्रः 358 ऋष्यादिकरषडङ्गन्यासविधिः 3=8 वश्यादिकृत्येषु ध्यानाचनाजपविधिः 3=4 परिमलमन्त्रप्रयोगः ३८४-३८६ महाकृत्यात्रिनियोगस्त न-३८६ शत्रोः प्रतिमा(पुत्तलो) निर्मितिः 3=4-3=0 तत्प्राराप्रांतिष्ठा-होमादिविधिः ३८७ मारगोच्चाटनशान्तिवश्यकम्मीिंग 350 विशेषतो महाशान्तिविधिः ३८७ योगिनीतन्त्रोक्तो वज्जवंरोचनीयायास्त्रयोदशाणः षोडगाणंश्च मन्त्र 035-375 मन्त्रवर्णस्था देवाश्छन्दांशि ऋवयश्व \$35-035 मन्त्रस्य सकलघ्यानम् 53€-93€ निष्कलध्यानम् ₹3\$ **अतिकल**घ्यानम् ₹3€ मण्डलार्चनविधिः (यन्त्राचीविधिः) ¥35-535 पूजाप्रयोगः ₹35-135 335 पुरश्वरणम् पूजा-ध्यान-होमतर्पणाद्युपाये-355-73€ र्वश्य-मुष्टि स्तम्भन-विषरोगादिनाशन-

नौकागजादिस्तम्भनोच्चाटनादिकमैविधिः

पथ धूमावतीमन्त्रविधानम्-तत्र-

मन्त्रोद्धारः

335

335

| विषय: | पृष्ठ संख्या |
|--|--------------|
| ऋष्यादि-करडङ्गन्यासविधिः, | 336 - |
| ध्यानम्पुरश्चर्या च | 36€-800 |
| मारगोच्चाटनविद्वेषकर्मागि तच्छान्तिश्च | 800-807 |
| प्रतिमा (पुत्तली) विधानम् | 805-803 |
| | 6-7171 |
| [एकोनपञ्चाशत्तरङ्गः-पृष्ठ-४०४-४५२] | esquile : |
| दक्षिणकालिकार-त्रविधानम्— | place. |
| द्वाविशाक्षरमन्त्रोद्वारः— | 808 |
| मन्त्रं प्रशस्तः | 808-80X |
| ऋष्यादि-कर-षडङ्गन्यासविधिः | Kox |
| कालीतन्त्रोक्तमृष्यादिन्यासविधानम् | ४०६ |
| वीरतन्त्रोक्तः षडङ्गन्यासः | 80€ |
| कालीतन्त्रोक्तः षडङ्गन्यासः | 308 |
| फेत्कारिस्मितन्त्रोक्तःसमस्ताङ्गन्यासिवधिः | 808 |
| कुमारीकल्पोक्तः सर्वाङ्गन्यासः | 808 |
| च्यानम् | 808-800 |
| यन्त्रन्तद्यजनविधिश्च | 308-208 |
| रक्षिराकालिकाप्रयोगः | 808-880 |
| दक्षिग्।कालिकागायत्रीमन्त्रस्तत्प्रशस्तिश्च | 880 |
| पूजने विशेषो विधिः | 866 |
| शिखाबन्धनमन्त्रः, ग्रासनशोधनमन्त्रः, | 866 |
| पापापनोदनमन्त्रः, पादप्रक्षालनमन्त्रः, सर्वविघ्नोत्सारग्रमन्त्रश्च | 885 |
| भूमिशोधनमःत्रो भूम्यभिमन्त्ररामन्त्रश्च | . x 8 5 |
| मृद्वचुडककोमलासनानि, मृतासनं विना | . 865 |
| कालिकाजपे नरकावाप्तिः | 885 |
| मण्डलमन्त्रः, पुष्पाधिष्ठानमनुः, पुष्पजलाहररामन्त्रश्च | |
| कायवाविचतशोधनमन्त्र ग्रात्मरक्षर्गमन्त्रश्च | 817 |
| धन्तःपूजाविधः (देहमयपीठपूजाविधिः) पीठन्यासमन्त्रशच | 863-86= |

| विषय: | पृष्ठ संख्या |
|---|---|
| भावचुडामिंगप्रोक्तो गुरुक्रमः | ४१= |
| कालिकाया गुरुकमे दिव्यौघाः, सिद्धौघाः, | Supplied States |
| मानवीघाश्च गुरवः | 382-888 |
| दिव्यौघादिगुरूगामावासस्थानम् | 398 |
| मानवीधगुरूगान्नामान्ते शानन्दनाथेति शब्दयोजनं, | ar the Principle |
| गुरु इपाणां स्त्रीणां नामान्ते प्रम्बेतिशब्दयोजनञ्च | 388 |
| बलिपूजादिकमंसु निशाकाल एवाक्षयफलदः | 388 |
| रात्रौ कौलिकस्य कृते पर्य्यटन-शक्तिपूजनयोरनिवा | र्यत्वम् ४२० |
| श्रथ काम्यवलि:-तत्र- | spens regulation and |
| कालिकापुरागोक्तश्छागादिवलिनिवेदनविधिः | 850 |
| बलिमन्त्रद्वयम | 820-858 |
| वाराहीमंहितोक्तो बलिदानविधिः | 856-850 |
| बलिपण्वादीनां लक्षगानि | 856-855 |
| पणुप्रोक्षरामन्त्रः खङ्गपूजनन्तन्मन्त्राश्च | ४२२-४२४ |
| खङ्गलक्षराम्, भेदने (बलिच्छेदने) क्षुरिका-कुठार- | TOTAL STREET, |
| परशुखण्डानान्निषेघोक्तिः | ४२४ |
| छेदने ग्रधिकारितोक्तिः | 85X |
| बनिशीर्ष (मस्तक) पतनविचारः | ४२४-४२६ |
| शीर्षोपरि ज्वलद्दीपविचारः | 828 |
| ग्राह-कच्छप-गोधा-मत्स्यानाम्पक्षीग्।ञ्च शीर्षोपरि | - 824 |
| दीपदाननिषंधोक्तिः, दीपे घृतादिद्रव्यदानविचारो- | HER DIS RELIGIONS |
| जपसंख्योक्तिश्च | ४२६-४२७ |
| जपस्थानविचारः, एकलिङ्गस्थानलक्षरगञ्च | 820 |
| जपमालाविचारो ध्यानञ्च | 850-85= |
| वश्याकर्षणकर्मणि द्वाविशाक्षरमंत्रे कामबाणबीजप | ाञ्चक- |
| संयोजनविधिः | 84= |
| वश्यादिकाम्यकर्मविधिः | 854-838 |
| | |

| विषय: | पृष्ठ संख्या |
|--|--------------|
| भ्रय शिवावलिप्रकारः | X38-83X |
| दीपदानिवधिः | 834-836 |
| कालीस्तोत्रम् (कर्पू रस्तवराजः) | 3:8-3:8 |
| जगन्मङ्गलन्नाम कवचम् | 838-885 |
| अथ श्रीदक्षिणकालिकाया मन्त्रभेदा:- | 883 |
| एकाक्षरो महामन्त्रः | 883 |
| एकविशत्यक्षर-त्रयोविशाक्षर-द्वाविशाक्षर-विशाक्षरमन्त्राः | 883 |
| सिद्धकालीमहाविद्यामन्त्रविधिः | 885-888 |
| महाकालीमहाविद्यात्र्यक्षरमन्त्रः | RRX |
| ब्रह्मोक्तः पञ्चाक्षरीमहाविद्यामन्त्रः | 888 |
| त्रैलोक्यमोहिनीविद्यायाः षडक्षरो मन्त्रः | 888 |
| चतुर्व्वर्गफलप्रदोऽष्टाक्षरीभहाविद्यामन्त्रः | RRX |
| ब्रह्मोक्त एकादशाक्षरीविद्यामन्त्रविधिः | ४४४-४४६ |
| दशाक्षरीमहाविद्यामन्त्रः | 886 |
| विशाक्षरीमहाविद्यामन्त्रः | 889 |
| प्रकारान्तरेग विशाक्षरीमहाविद्यामन्त्रः | 880 |
| त्रिभुवनेश्वरीत्र्यक्षरीमहाविद्यामन्त्र: | 889 |
| ग्रष्टाक्षरीमहाविद्यामन्त्रः | 880 |
| पञ्चाक्षरीमहाविद्यामन्त्रः | 880 |
| सर्वसम्पत्प्रदो नवाक्षरीमहाविद्यामन्त्रः | 880 |
| सर्वशत्रुभयङ्करो नवाक्षरीमहाविद्यामन्त्रः | 880-85 |
| मोक्षदायिन्यष्टाक्षरीमहाविद्यामन्त्रः | ४४८ |
| चतुर्व्वर्गफलप्रदश्चतुर्दशाक्षरीमहाविद्यामन्त्रः | 885 |
| कल्पद्रमोपमः षोडशाक्षरीमहाविद्यामन्त्रः | 885 |
| मायातन्त्रोक्त एकादशाक्षरीमहाविद्यामन्त्रः | 884 |
| श्रथ विद्यामाहात्म्यम् | 885-840 |
| अय श्मशानकालिकाया एकादशार्णमन्त्रजपपूजाविधिः | 840-845 |
| श्मशानकालिकायाः सप्ताक्षरात्मा मन्त्रः | ४४२ |

| विषय: | पृष्ठ संस्या |
|--|--------------|
| गुह्मकालीमन्त्रः | 844 |
| [पञ्चाशत्तमस्तरङ्गः-पृष्ठ-४४३-५०४] | |
| भद्रकालीमन्त्रस्तद्विधिश्च | FXS |
| महाकालीचतुर्दशाक्षरमन्त्रस्तद्विधिश्च | *X5-XXX |
| भद्रकाल्या अष्टचत्त्वारिशाक्षरो मन्त्रस्तद्विधिः, | tribute. |
| रुद्रदण्डप्रयोगविधिश्च | ४४४-४४८ |
| ध्रथ ताराप्रकरणम् — | ediración. |
| तारापञ्चाक्षरीमन्त्रभेदाः | ४४८-४६१ |
| नीलसरस्वती-तारा-उग्रतारा-एकजटा-महानील- | |
| सरस्वती-कुल्लुकामन्त्राः | ४६१-४६२ |
| वसिष्ठणप्तोन्मुक्ता ताराविद्या | ४६२ |
| एकवीराकल्पोक्तस्तारापञ्चाक्षरो मन्त्रो वधूबीजलक्षराञ्च | 863 |
| ताराद्यपञ्चाक्षरीविद्योपासनायां द्विजानामेवाधिकारः | ४६२ |
| नीलसरस्वत्यभिधायास्तारायाः- | or reality |
| मन्त्रध्यानम् | * \$ \$ |
| श्राचमनमन्त्रः | 843 |
| ि शिखाबन्धनमन्त्रः १००० वर्षा स्थापना स्थापना । | 863 |
| श्रर्घ्यमन्त्रः | 863. |
| गायत्रीमन्त्र: | 863 |
| पादविशुद्धिमन्त्रः | 868 |
| विघ्नोत्सारणमन्त्रः | 868 |
| भूमिशोधनमन्त्रः | 868 |
| भूम्यभिमन्त्रणमन्त्रः | 848 |
| ै मण्डलारचनमन्त्रः | RER. |
| श्रपरो मण्डलारचनमन्त्रः | * \$ \$ \$ |
| वाक्चित्तशोधनमन्त्र: | xéx |
| जलाभिमन्त्रणमन्त्रः | RER |
| पुष्पाधिष्ठानमन्त्रः | * AER |

| विषय: | पृष्ठ संस्या |
|---|-----------------|
| पुष्पोद्धरण-शोधनमन्त्रस्तत्परिग्रहमन्त्रश्च | ४६४-४६४ |
| एकजटात्मकयन्त्रोद्धारः | . 868 |
| भूतशुद्धिप्राग्पप्रतिष्ठाविधिः | ४६४ |
| मातृकान्यासविधिः | ४६६ |
| ताराषोढान्यासविधिः | 844 |
| षोढान्तर (गुह्यषोढा) न्यासविधिः | ४६६ |
| तारामहाषोढान्यासिवधिस्तत्र— | THE RESERVE THE |
| रुद्र-ग्रह-लोकपाल-शिवशक्तितारादि-पीठभ्यासविधिः | ४६७-४६६ |
| वागूपिर्गीन्यासविधिः | 846-830 |
| ऋष्यादिकरषडङ्गन्यासविधिः | 800 |
| कामभेदेन घ्यानविधिः | 800-805 |
| पूजापीठाचंनविधिस्तत्र- | ४७२ ४७६ |
| श्रघ्यंगन्धपुष्पोपचारादिमन्त्राः | |
| तारागुरुकमः | Principle in |
| नैवेद्य-बलिमन्त्रश्च | - Miles done |
| म्रथ तारापूजाप्रयोगः | ४७६-४८६ |
| म्रथ तारामन्त्रसाधनविधिः (पञ्चाङ्गपुरश्चर्याविधिः)तत्र- | ४८६-४८६ |
| जपमालाविचारः | 328 |
| हवनादिकार्येषु ग्राह्यद्रव्यारिष | 8=6-860 |
| कुल्लुकामन्त्रोद्धारः, | \$38-038 |
| कवित्त्व-वश्यादिकाम्यविधिश्च | |
| शर्गागतन्नाम तारास्तोत्रम् | 838 |
| ताराकवचम् | 86X-860 |
| प्रथ ताराविद्याया मन्त्रभेदास्तत्र— | 838-038 |
| C C - C | |
| नवाक्षरात्मको मन्त्रस्तद्विधिश्च | office of Alle |
| बेदमातुरष्टाक्षरात्मको मन्त्रः | The French |
| हतकवित्वपदः सप्तद्याक्षरात्मको मन्त्रः | Section 2 |
| Annighted a manifestion dear | Married Ba |

| विषय: | पृष्ठ संख्या |
|--|---|
| नवाक्षरो हंसताराविद्यामन्त्रः | 885 |
| भ्रथाऽस्याः पुरश्चरगभेदाः | 866-700 |
| नवाक्षरीमहाविद्यामन्त्रजपादिविधिः | X00-X0X |
| [एकपञ्चाशत्तमस्तरङ्गः-पृष्ठ-५०६-५५२] | |
| भ्रय चमत्कारिण्यो विद्यास्तत्र— | Million Co. |
| ग्रमृतेश्वरीविद्याया वाक्प्रदः पञ्चाक्षरो मन्त्रस्तद्विधिश्च | X06-X00 |
| वीर्घायुष्यप्रदाया मृत्युञ्जयाविद्याया मन्त्रस्तद्विधिश्च | 200 |
| . • त्रिपुटाविद्यामन्त्रस्तद्विधिश्च - अस्ति अस्ति । अस्ति | You |
| गारुडोविद्यायास्त्रयोविज्ञार्णमन्त्रविधिः | 30K-20K |
| । श्रश्वारूढाविद्याया वश्यादिसिद्धिप्रदो दशाक्षरमन्त्र- | Ten series |
| F स्तद्विधिश्च | X08-X90 |
| अन्नपूर्णामन्त्रविधिः | X 80-X 88 |
| ्र नवात्मा मन्त्रः विकास विकास विकास विकास विकास करें के किया है किया है किया है किया है किया है किया है किया | 38.8 |
| ः र नवात्मिकामन्त्रः | 188 |
| देवीहृदयविद्यायाःस्त्रीणां सद्यःफलप्रदश्चतुरक्षर- | P1 - 28 - 10 |
| मन्त्रविधिः | 198 |
| गौरीविद्याया वश्यादीप्सितसिद्धिप्रदो- | 201 - 101 |
| द्वादशार्णमन्त्रविधिः | × ११२ |
| लक्षस्वर्णप्रदाबिद्यायाः पञ्चदशाक्षरमन्त्रविधिः | * |
| निष्कत्रयप्रदाविद्याया द्वादशार्णमन्त्रविधिः | ₹ 9× |
| श्रभीष्टवादिनीविद्याया मन्त्रविधिः | ESX. |
| मातिङ्गिनीविद्यायाः सर्वाभीष्टप्रदो द्वादशार्ण- | STATE OF THE |
| मश्त्रविधिः । १९०० सम्बद्धाः | X83-X8X |
| राज्यलक्ष्मीविद्यायाः षोडणार्शमन्त्रविधिः | XSX |
| महालक्ष्मीविद्यायाः सप्तविशार्णमन्त्रविधिः | x 8 x - 8 8 x |
| सिद्धलक्ष्मीविद्यायाः समस्ताभीष्टदः सप्तदशार्गं- | re |
| मन्त्रविधिर्यन्त्रप्रकारश्च | 284-484 |
| ग्रथ परञ्ज्योतिर्विद्याविधानन्तत्र— | 280 |
| | Jan. |
| THE PART OF THE PA | |
| | Market Comment |

| विषय: | पृष्ठ संख्या |
|---|---------------|
| परञ्ज्योतिर्विद्यामन्त्रः | 2,80 |
| ऋष्यादि-षडङ्गन्यासविधिः | X80-X8= |
| ग्रंथ परदेवतानिष्कलविधानन्तत्र — | ४१८ |
| च्यानम्, ऋष्यादिः, षडङ्गन्यासभ्च | ४१६ |
| यन्त्रनतद्यजनविधिश्च | X ? 5- X ? E |
| क तत्प्रयोगः । अवस्त्र विकास कार्या विकास विकास विकास विकास विकास | 38% |
| म्रथ सञ्जीवनीविद्याविधानन्तत्र— | 31% |
| श्रीसञ्जीवनीविद्याया विशत्यक्षरो मन्त्रः | X20. |
| तद्ब्यादिः, षडङ्गन्यासः | *20 |
| भूजंयन्त्राचीविधिः 🛒 | x20-x28 |
| ग्रथ प्रयोगः— | x58-x55 |
| पुरश्चरणविधिः | 477 |
| र्भरवीसञ्जीवनी (मृत्युविनाशिनी) मन्त्रः | x25-x53 |
| , तद्वयादिषडङ्गन्यासविधिः | 473 |
| यम्त्रन्तद्यजनविधिश्च अ | X53-X58 |
| ब्रथ प्रयोगः | x5x-x5x |
| पुरश्चरणम् | |
| [द्विपञ्चाशत्तमस्तरङ्गः-पृष्ठ—४२६-४४६] | |
| वयं वाराहीविधिस्तत्र— | ४२६ |
| स्तम्भनाद्यखिलेष्टदादशोत्तरशताक्षरीविद्यामम्त्रोद्धारः | ४२६-४२८ |
| ऋष्यादि-षडङ्गन्यासिवधिः | 35% |
| यन्त्र-तदर्चनविधिश्च | 35% |
| श्रयं प्रयोगः | o \$ x-3 \$ x |
| पुरेश्वरणम् | X30 |
| वश्यादिकाम्यप्रयोगविधिस्तत्र— | X30 |
| | ¥\$8-¥\$\$ |
| त्रमुनादिद्रव्योपचारैः काम्यपूजाविधिः | # F X - F F X |

| विषयः | पृष्ठ संख्या |
|--|---|
| काम्यहोमविधिः | X\$3-X\$X |
| विषनाडचादिकालविशेषोक्तिः | X \$ 8-X \$ X |
| स्तम्भनादि कराष्ट्रयन्त्रविधिविद्यावैभवञ्च | X 3 X - X 3 = |
| (१) शत्रुसेनास्तम्भनकृद्यन्त्रलेखनकमः | 43E-X80 |
| (२) ग्ररातिगत्यादिस्तम्भनकृद्यन्त्रलेखनकमः | X80-X88 |
| (३) स्तम्भनकरयन्त्रान्तरलेखनकमः | xx6-xx5 |
| (४) सर्वरोगगान्तिकरयन्त्रलेखनकमः | xx5-xx3 |
| (४) स्तम्भनकरकोष्ठयन्त्रलेखनक्रमः | XX3-XXX |
| (६) समस्ताभीष्टफलप्रदमहावज्ययन्त्ररचनाक्रमः | 488 |
| (७) (१) वज्रवज्राभिधयन्त्रविलेखनकमः | X88-X8X |
| (२) प्रोक्तसप्तयम्त्रेषु विद्याप्राप्त्यभिषेके | TOTAL STEP STEP STEP STEP STEP STEP STEP STEP |
| यन्त्रत्रयनेखनकमः | XXX |
| (८) म्राखिलविनियोगसिद्धिप्रदयन्त्रविलेखनकमः | X86 |
| [ग्रथ त्रिपञ्चाशत्तमस्तरङ्गः-पृष्ठ-४४७-५६ | 2 1 |
| भ्रथ कुरुकुल्लाविधानन्तत्र- | esk. |
| रत्नपोतचारिण्याः कुरुकुल्लायाः सप्ताक्षरी-त्रयोदशाक्षरी- | |
| पञ्चिवशाक्षरीविद्यामनुत्रयोपदेशः | X80-X8= |
| कुरुकुल्लायाः समर्चनविधिस्तत्र- | 48c-48E |
| तत्तन्मन्त्रोपदेशो नित्यपूजाबल्युक्तिश्च | 28E-XX0 |
| ताराशक्त देशाक्षरीविद्यामन्त्रेगा बलिदानोपदेशः | . 440 |
| ध्यानम् | 44. |
| भथ तत्त्रयोगः- | 2×0-××2 |
| पुरश्चरणम् | *** |
| काम्यप्रयोगविधिस्तत्र- | *** |
| वश्वाद्यभोष्टसिद्धये सर्ववादिद्रव्यहीं मिविधिः | 224-223 |
| उत्पलादिपुष्पगन्धादिभिः पूत्राविधिः | 444-448 |
| पूजा-धारण-स्थापनादियन्त्रविधिस्तत्र— | ZXX. |
| नवयोनियन्त्ररचनाविधिस्तत्क्रमश्च | 228-222 |
| | Contract to the second |

| विषय: | पृष्ठ संस्या |
|---|--------------|
| कोष्ठवज्रयन्त्रविरचनविधिस्तत्क्रमण्च | XXX-XXE |
| त्रिविधविषनाशनयन्त्ररचनाविधिस्तत्त्रमश्च | 224-220 |
| यन्त्राष्टकयन्त्ररचनाविधिस्तत्क्रमश्च | ४४८-४६० |
| एकविंगत्यधिकशतकोष्ठरूपवज्ययन्त्रविधि- | HALE. |
| स्तद्रचनाक्रमंश्च | ४६०-४६२ |
| [ग्रथ चतुपःञ्चाशत्तमस्तरङ्गःपृष्ठ-४६३-४७४] | |
| ग्रथ यक्षिणीविधानन्तत्र— | 443 |
| धनदायक्षिण्या नवार्णमन्त्रविधिस्तत्प्रयोगम्ब | ४६३-४६४ |
| पुरश्चरणम्, दारिद्रचशमनप्रयोगविधिश्च | ४६४ |
| वसन्ततिलकायक्षिण्या एकादशाक्षरो मन्त्रः | ६६४ |
| ऋष्यादिध्यानञ्च | ४६६ |
| पूजास्थानोक्तिर्यन्त्रञ्च | ४६६ |
| ग्रर्चनविधिजंपकालाविधिनिर्देशश्च | ५६६ |
| सिद्धिलक्षगोक्तिः (प्रत्यक्षदर्भनसङ्केतः) | ४६६-४६७ |
| सुरसुन्दरीयक्षिण्याः प्रातःकृत्यम्, षडङ्गन्यासश्च | : 40 |
| यन्त्रन्तदर्चाविधिश्च | ४६७-४६= |
| सुरसुन्दरीयक्षिण्याः पञ्चदशाक्षरो मन्त्रः | ४६८ |
| तज्जपविधिस्तत्फिनिर्देशः, ग्रन्यस्त्रीगमननिषेधश्च | x 46-400 |
| मनोहरायक्षिण्या एकादशाक्षरमन्त्रविधानम् | ४६६-४७० |
| कनकवतीयक्षिग्गीमहाविद्यामन्त्रविधानम् | \$00-x08 |
| कामेश्वरीयक्षिग्गीमन्त्रविधिः | ५७१-५७२ |
| पद्मिनीयक्षिर्गीमन्त्रविधिः | इ७४-५७३ |
| विश्वामित्रसाधितानिटनीमहाविद्यायक्षिग्गीमन्त्रविधानम् | ४७३-५७४ |
| मधुमतीमहाविद्यायक्षिग्गीमन्त्रविधिः | ४७४-४७४ |
| साधन-कालाधिकारिनिर्णयः | - Xox |
| [ग्रथ पञ्चपञ्चाशत्तमस्तरङ्गः-पृष्ठ-५७६-५६४] | 1 |
| म्रथ गायत्रीविधानन्तत्र— | प्र७६ |
| गायत्रीमन्त्रः, ऋष्यादिः, व्याहृतिभिः षडङ्गन्यासम्ब | ४७६ |
| | |

| विषय: | पृष्ठ संख्या |
|---|-----------------|
| व्याहृतीनां घ्यानम् | थ्०१-१७४ |
| गायत्र्या ऋष्यादिस्तनुन्यासश्च (ग्रक्षरन्यासश्च) | X99 |
| , गायत्रीपदन्यासः | eex . |
| गायत्रीषडङ्गन्यासी ध्यानम्त्राणायामश्च | eox vos |
| गायत्रीयन्त्रन्तदर्चाविधिश्च | प्रथम |
| भ्रथ प्रयोगः पुरश्चरणञ्च | X02-X20 |
| काम्यप्रयोगविधिः | ५50-45१ |
| चतुर्व्यंफलसिद्धिदं यन्त्रम् | प्रदश |
| त्रिष्टुब्मन्त्रविधिः (ग्राग्नेयास्त्रविधिः) तत्र- | प्रदश |
| ं त्रिष्टुब्मन्त्रः, ऋष्यादिश्च | 45१ |
| षडङ्गन्यासविधिः | x=2 |
| वर्गान्यासः पदन्यासो ध्यानञ्च | ४६२ |
| यन्त्रम् (मण्डलम्) तदचीविधिश्च | प्रदर-रदरे |
| श्रथ प्रयोगः | X=3-X=X |
| पुरश्चर्याविधिः | Xex |
| श्राग्नेयास्त्रमन्त्रः | ४ ५४ |
| ऋष्यादिः षडङ्गन्यासादिविधिश्च | ¥=X |
| पाटाप्टक जपविधिः | ४८६ |
| पादविभागविधिः | 4=६ |
| पादाक्षरदेवताव्यानम् | ४८६ |
| मन्त्रप्रयोगसंहारविधिः | ४८६ |
| नक्षत्रागान्देवताऽसुरमानुषभेदाः | ४८६-४८७ |
| काम्यहोमतर्पं गाविधिः | 03X-0-XE0 |
| म्रतिदुर्गामन्त्रः | PARTE FIFE |
| गारिएदुर्गामन्त्रः | 03× 34 4 |
| विश्वद्गीमन्त्रः | white he X 60 |
| ्र सिन्धदुर्गामन्त्रः । । । । । । । । । । । । । । । । । । । | ogg grantinent |
| अग्निदुर्गामन्त्रः | 12 M. 12 M. 180 |
| | |

| विषय: | पृष्ठ संस्या |
|--|-----------------|
| ⁶⁰ होमविधिः | Bake Bullet AES |
| सिकताप्रयोगविधिः (विकास स्वाप्ति) | 53x-83x |
| ^{६५} प्रयोगः | x87-x88 |
| ं एकोनपच्चाशतकोष्ठयनत्रलेखनविधिः | 838 |
| त्र नवकोष्ठयन्त्रलेखनविधिः | XEX |
| GREER POR | 1 200 40 |
| ्रिथ षट्पञ्चाशत्तमस्तरङ्गः-पृष्ठ सं० ४ | Cx-41.0] |
| म्रथ दिनास्त्र-कृत्यास्त्रविधान - | X S X |
| म्रतिदुर्गामन्वास्यो दिनास्त्रमन्त्रः | x3x x3x |
| | xex |
| दिनास्त्रमन्त्रप्रयोगविधिः | ४६४-४६७ |
| रात्रिकृत्यविधिः | X€0-X€= |
| | 332 732 |
| कृत्यास्त्रमन्त्रप्रयोगविधिः | 33X 33X |
| पुत्तलीप्रयोगविधिः | 707-33X |
| त्र्यम्बकशताक्षरमन्त्रविधिः | . ६०२-६०३ |
| तत्त्रयोगः | 803-608 |
| तत्पुरश्चरणम् | 608 |
| दीर्घायुष्करादिनानाप्रयोगविधिः | €0¥ |
| धारग्-स्थापनयन्त्रविधिः | ६०४-६०६ |
| वारुगीऋग्विधानम् | ६०६ |
| ध्रुवास्वाद्येत्यृङ्मन्त्रः | ६०६ |
| तदृष्यादिन्यासविधिः | ६०७ |
| च्यानन्तदर्चनवि धिश्च | ६०७ |
| त्तरप्रयोगः | ₹09-€05 |
| पुरश्चरणम, | |
| ऋगमोचनश्याप्त्यादिकाम्यप्रयोगविधिः | ६०८-६०६ |
| स्रय:पाशादि (निगडादि)स्फोटनविधिः | 307 |

| (40) | |
|---|-------------------|
| विषय; | पृष्ठ संख्या |
| काम्यधारणयन्त्रविधिः | 408 |
| परऋगोत्यृङ्मन्त्र। | Ę ?0 |
| ध्रथ लवगमन्त्रविधानम् | Ę १0 |
| ऋ राञ्चकात्मको लवरामन्त्राः | £ ? o |
| ऋष्यादिः | £90- £ 99 |
| षडङ्गन्यासादिः | \$88 miles # \$88 |
| चिटिमन्त्रः | 488 |
| अ ग्निच्यानम् | 193 |
| यामवतीध्यानम् | 489 |
| दुर्गाच्यानम् | 512 |
| भद्रकालीध्यानम् | 488-488 |
| पुरश्वरणम् | 417 |
| वश्यादिकाम्यप्रयोगविधिः | 485-483 |
| पञ्चपुत्तलोप्रयोगिवधिः | . 683 |
| यामवतीमन्त्र: | £ 8 x |
| दुर्गामन्त्रः | ६१४-६१४ |
| भद्रकालीमन्त्रः | 48x-484 |
| क्वरो न्मादग्रहपीडादिनाशनयन्त्रविधानग् | ६१६-६१७ |
| पिशङ्गभृष्टच सृङ् मन्त्रः | |
| रक्षोहणं वाजिनमित्यृङ्मन्त्रः | Section . Section |
| श्रयात अग्र इत्यृङ्मन्त्रः | |
| ऋवत्रयागामृष्यादिः | |
| कृत्याभिभवनिर्मोचनयन्त्रविधानम् | 680 |
| नृसिंहबीजमन्त्रः | Ę १७ |
| प्रत्यिङ्गरामन्त्रस्तदध्यादिश्च | 484 |
| प्रहोन्मादज्वरकृत्याद्युपद्रवनाशनयन्त्रविचिः | 684 |
| कृणुष्वपाजेति पच्चदशर्चसूक्तमन्त्रः | 418 |
| विज्योतिषेत्यृङ् मन्त्रस्तदृष्यादिश्च | £20 |
| | |

| विषय: | पृष्ठ संस्था |
|--|--------------|
| र वंसमृद्धिदं 'इन्द्रश्रेष्ठानि' मन्त्रयन्त्रविधानम् | \$70-\$78 |
| इन्द्रश्लेष्ठानीत्यृङ् मन्त्रश्तरध्यादिश्च | \$79 |
| सर्वसमृद्धिप्रद-बलनिष्दनयन्त्रविधानम् | 197 |
| विशिष्टरत्नगोधरादिसर्वसम्पत्प्रदयन्त्रविधानम् | \$71 |
| वयन्तः एभिरित्यृङ्मन्त्रस्तद्व्यादिश्च | 455 |
| यन्त्रसाधनविधिस्तत्प्रयोगम्च | \$77-\$78 |
| गन्त्रगायत्रीमन्त्रः | 658 |

are property

HIL WELL SHOWN

And Angell of Philips

and the transfer in the second

建项制的第三人称单数

BUILDING

2 2 2

STANTE

24 0-3 19

611978

0 3.3

109

13